● कविताएं...

आंधी गुस्से वाली है

ठंडी मस्त हवा शर्मीली,
आंधी गुस्से वाली है।
धूल भरे अंधड़ आते हैं
जड़ से पेड़ उखड़ जाते हैं,
गुस्से में नन्हें पौधों की
इसने जान निकाली है।
आंधी में कुछ नहीं सूझता,
कोई कितना रहे जूझता,
हमें डराने को इसने एक
काली बिल्ली पाली है।

■ रमेश तैलंग

अब आई बरसात

बन्दर बोला, सुनो बन्दरिया
अब आई बरसात।
पानी बरसे, बिजली चमके
क्या होंगे हालात।
तभी बन्दरिया बोली हंसकर
क्यों मन में घबराओ।
जाकर तुम बाजार बड़ा-सा
एक छाता ले आओ।
उसके नीचे हम मस्ती में
उछलेंगे-कूदेंगे।
खूब बरसते पानी में भी
निर्भय हो घूमेंगे।

■ महेश कटारे सुगम

● चुटकुले...

पत्नी : अजी सुनते हो, हमारी शादी कराने वाले पंडित जी बीमार हैं।
पति : (ठंडी आह भरते हुए)
पत्नी : क्या हुआ? उनके लिए दुआ नहीं करोगे?
पति : अरे मैं तो सोच रहा हूं कि दूसरों का बुरा करने वाले आखिर कब तक बचे रहेंगे!

इंटरव्यूअर : आपकी ताकत क्या है?
पप्पू : मैं बहुत जल्दी किसी को भी अपना दोस्त बना लेता हूं।
इंटरव्यूअर : बहुत अच्छे! और आपकी कमजोरी क्या है?
पप्पू : मैं किसी भी ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे को अपना दोस्त समझ बैठता हूं!

● जानकारी...

छाते काले रंग के ही क्यों

गर्मी का मौसम आते ही लोग तेज धूप और लू से बचने के तरीके ढूंढने लगते हैं। कोई सिर पर गमछा रखता है तो कोई टोपी पहनता है, लेकिन सबसे ज्यादा इस्तेमाल छाते का होता है। आपने भी देखा होगा कि बारिश से बचना हो या तेज धूप से बाजार में ज्यादातर छाते काले रंग के ही दिखाई देते हैं। हालांकि आजकल अलग-अलग रंगों और डिजाइन वाले छाते भी मिलने लगे हैं, लेकिन फिर भी ब्लैक छाता सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। ऐसे में आइए जानते हैं कि आखिर छाते ज्यादातर काले रंग के ही क्यों होते हैं और इसके पीछे का साइंस क्या है।

छाते ज्यादातर काले रंग के ही क्यों होते हैं-साइंस के मुताबिक काला रंग सूरज की रोशनी और अल्ट्रावॉयलेट यानी यूवी किरणों को सबसे ज्यादा अवशोषित करता है। यही कारण है कि जब कोई व्यक्ति काले रंग के कपड़े पहनता है तो उसे ज्यादा गर्मी महसूस होती है। ब्लैक टीशर्ट शरीर से चिपकी होती है। ऐसे में कपड़ा सूरज की गर्मी को सोखकर सीधे शरीर तक पहुंचा देता है। इसी वजह से गर्मियों में काले कपड़े पहनने पर ज्यादा पसीना और गर्मी महसूस होती है। छाते के मामले में स्थिति बिल्कुल अलग होती है। छाता शरीर से कुछ दूरी पर रहता है। जब काला छाता सूरज की किरणों को सोखता है तो वह गर्मी छाते की ऊपरी सतह पर ही रुक जाती है और सीधे शरीर तक नहीं पहुंच पाती है। इस तरह छाता धूप और यूवी किरणों को शरीर तक आने से रोक देता है। यही वजह है कि काला छाता तेज धूप में ज्यादा असरदार माना जाता है।

इसके पीछे का साइंस क्या है-सूरज की किरणों में मौजूद यूवी-ए और यूवी-बी किरणें स्किन के लिए नुकसानदायक मानी जाती हैं। लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से सनबर्न, स्किन एलर्जी और त्वचा संबंधी दूसरी समस्याएं हो सकती हैं। काला छाता इन हानिकारक किरणों को काफी हद तक अवशोषित कर लेता है। इससे शरीर पर उनका असर कम पड़ता है। यही कारण है कि एक्सपर्ट भी तेज धूप में छाते का इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं।

बारिश में कैसे फायदेमंद होता है काला छाता-काला छाता सिर्फ धूप में ही नहीं, बल्कि बारिश के मौसम में भी उपयोगी माना जाता है। काले रंग पर गंदगी और दाग कम दिखाई देते हैं। साथ ही यह जल्दी सूख भी जाता है। इसी कारण पुराने समय से काले छाते ज्यादा बनाए और इस्तेमाल किए जाते रहे हैं।

क्या रंग-बिरंगे छाते कम सुरक्षित होते हैं-आजकल फैशन के कारण लोग रंग-बिरंगे छाते भी इस्तेमाल करते हैं। हालांकि हल्के रंग के छाते धूप को कुछ हद तक रिफ्लेक्ट जरूर करते हैं, लेकिन यूवी किरणों को उतना प्रभावी तरीके से नहीं रोक पाते जितना काला छाता रोकता है। इसी वजह से तेज धूप और गर्मी में ब्लैक छाता ज्यादा भरोसेमंद माना जाता है।

● जातक कथा

बुद्धि का चमत्कार

उसका बेटा सुन्दर भी काफी बुद्धिमान था। वह गांव के पण्डित कस्तूरीलाल के पास जाकर शिक्षा ग्रहण कर रहा था। उसने भी अपने मन में यही सोचा हुआ था कि वह भी पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा और अपने मां-बाप के कदमों में दुनिया भर की सारी खुशियां और सारे सुख लाकर डाल देगा।

इंसान यदि किसी लक्ष्य को निर्धारित कर ले और सच्चे मन से उसे पाने का प्रयास करे तो वह उसमें सफलता प्राप्त कर ही लेता है। ऐसा ही सुन्दर के साथ भी हुआ...

आज से कई सौ साल पूर्व की बात है। एक गांव में रामसिंह नामक एक किसान अपनी पत्नी व बच्चे के साथ रहता था। रामसिंह अनपढ़ व गरीब था। मगर अपने बेटे सुन्दर को वह पढ़ा-लिखाकर किसी योग्य बनाना चाहता था ताकि उसका बेटा भी उसकी भाँति उम्र भर मेहनत-मजदूरी न करता रहे। अपने पुत्र से उसे बड़ी आशाएं थीं। लाखों सपने उसने अपने पुत्र को लेकर संजो डाले थे। वही उसके बुढ़ापे की लाठी था।

उसका बेटा सुन्दर भी काफी बुद्धिमान था। वह गांव के पण्डित कस्तूरीलाल के पास जाकर शिक्षा ग्रहण कर रहा था। उसने भी अपने मन में यही सोचा हुआ था कि वह भी पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा और अपने मां-बाप के कदमों में दुनिया भर की सारी खुशियां और सारे सुख लाकर डाल देगा। इंसान यदि किसी लक्ष्य को निर्धारित कर ले और सच्चे मन से उसे पाने का प्रयास करे तो वह उसमें सफलता प्राप्त कर ही लेता है। ऐसा ही सुन्दर के साथ भी हुआ। वह अपनी कक्षा में अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हुआ। सारे गांव में उसकी खूब वाहवाही हुई। अपने बेटे की इस सफलता पर रामसिंह का मस्तक भी गर्व से ऊंचा हो उठा।

एक रात रामसिंह ने अपनी पत्नी से कहा- ''सुन्दर की मां ! मेरे मन में सुन्दर को लेकर काफी दिनों से एक विचार उठ रहा है।''

''कहो जी।'' रामसिंह की पत्नी ने कहा- ''ऐसी क्या बात है? क्या सुन्दर की शादी-ब्याह का विचार बनाया है ?''

''अरी भागवान ! शादी ब्याह तो समय आने पर हम उसका करेंगे ही, मगर अभी उसे अपने पैरों पर तो खड़ा होने दें। मेरा तो यह विचार है कि क्यों न हम उसे शहर भेज दें ताकि वहां जाकर कोई अच्छा-सा काम-धंधा सीखकर कुछ बनकर दिखाए। यहां गांव में तो बस मेहनत-मजदूरी का ही धंधा है। पढ़ने-लिखने के बाद भी यदि उसे यही धंधा करना है तो पढ़ाई-लिखाई का लाभ ही क्या है? हमारा तो अपना कोई खेत भी नहीं है जिसमें मेहनत करके वह कोई तरक्की कर सके।''

''मगर सुन्दर के बापू! सुन्दर ने तो आज तक शहर देखा ही नहीं है, हम किसके भरोसे उसे शहर भेज दें ?'' सुन्दर की मां कमला ने कहा- ''माना कि हमारा सुन्दर समझदार और सूझबूझ वाला है और शहर में वह कोई अच्छा-सा काम-धंधा तलाश भी लेगा, मगर शहर में टिकने का कोई ठिकाना भी तो चाहिए।''

''सुनो सुन्दर की मां! शहर में मेरा एक मित्र है, हालांकि हम दोनों वर्षों से एक-दूसरे से नहीं मिले, मगर फिर भी मुझे उम्मीद है कि यदि मैं सुन्दर को उसका पता-ठिकाना समझाकर भेजूं तो वह अवश्य ही उसे शरण देगा और रोजी-रोजगार ढूढ़ने में वह सुन्दर की सहायता भी करेगा।''

''बात तो आपकी ठीक है सुन्दर के बापू, लेकिन मेरा मन नहीं मान रहा कि मैं अपने लाल को अपनी आंखों से दूर करूं।''

''ऐसा तुम अपनी ममता के हाथों मजबूर होकर कह रही हो, मगर दिल से तो तुम भी यही चाहती हो कि हमारा बेटा तरक्की करे। इसलिए दिल को मजबूत बनाओ। सुन्दर शहर जाकर कुछ बन गया तो हमारा बुढ़ापा भी सुख से गुजरेगा।'

और इस प्रकार रामसिंह ने अपनी पत्नी को समझा-बुझाकर सुन्दर को शहर भेजने के लिए राजी कर लिया।

उसी शाम सुन्दर जब अपने यार-दोस्तों के साथ खेल-कूदकर घर वापस आया तो रामसिंह ने बड़े प्यार से अपने पास बैठाया और अपने मन की बात बता दी।

सुन्दर यह जानकर बहुत खुश हुआ कि उसका बापू उसे शहर भेजना चाहता है।

वास्तव में सुन्दर भी यही चाहता था कि वह किसी प्रकार शहर चला जाए और वहां कोई ऐसा काम-धंधा करे जिससे उसका परिवार सदा-सदा के लिए गरीबी से छुटकारा पाकर सुख भोगे।

-जारी

● रोचक...

आइसलैंड और कोस्टा रिका

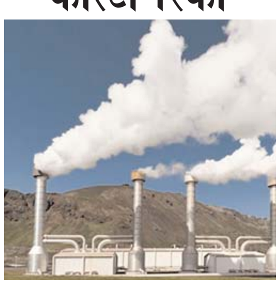

आइसलैंड और कोस्टा रिका जैसे देशों ने जीवाश्म ईंधनों पर अपनी निर्भरता कम करके और लगभग पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा की तरफ मुड़कर आधुनिक अर्थव्यवस्था खड़ी की है। तेल की दौलत पर निर्भर रहने के बजाय इन देशों ने जियोथर्मल एनर्जी, जलविद्युत, ग्रीन टेक्नोलॉजी और टिकाऊ बुनियादी ढांचे में भारी निवेश किया है। आइसलैंड की सफलता के पीछे सबसे बड़ी वजह उसका विशाल जियोथर्मल एनर्जी संसाधन है, क्योंकि यह देश एक ज्वालामुखी सक्रिय क्षेत्र में स्थित है इस वजह से पृथ्वी की सतह के नीचे काफी भारी मात्रा में गर्मी मौजूद है। आइसलैंड ने इस प्राकृतिक भूवैज्ञानिक गतिविधि को ऊर्जा के एक प्रमुख स्रोत में बदल दिया है। भूमिगत गर्म पानी और भाप को पाइपलाइन के जरिए से थर्मल पावर प्लांट तक पहुंचाया जाता है। यहां उनका इस्तेमाल बिजली और हीटिंग पैदा करने के लिए किया जाता है। दरअसल आइसलैंड के 90 फीसदी से ज्यादा घरों को तेल आधारित प्रणालियों के बजाय प्राकृतिक रूप से गर्म जियोथर्मल पानी का इस्तेमाल करके गर्म किया जाता है।

● कोयले का भंडार...

संयुक्त राज्य अमेरिका के पास विश्व स्तर पर सबसे बड़ा सिद्ध कोयले का भंडार है। यह दुनिया के कुल कोयला भंडार का लगभग 22.3 फीसदी है। वैश्विक कोयला भंडार में रूस लगभग 15.5 फीसदी के साथ दूसरे स्थान पर है। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया लगभग 14 फीसदी के साथ आता है और चीन और भारत चौथे और पांचवें स्थान पर आते हैं। चीन के पास 13.1 फीसदी और भारत के पास 10 फीसदी है। कोयले के सबसे बड़े उपयोग में से एक थर्मल पावर प्लांट में होता है। यहां इसे जलाकर भाप बनाई जाती है। यह भाप टर्बाइन को चलाती है और बिजली पैदा करती है।